डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 31-07-2020

विषय- वैदिक साहित्य

ऋग्वेद का रचना विन्यास क्रम

ऋग्वेद को पौरुषेय मानने वाले भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार ऋग्वेद के सभी मंडलों की रचना और संकलन एक ही काल में नहीं हुआ है । इनके अनुसार ऋग्वेद के विभिन्न मंडलों की रचना में शताब्दियों का अंतर रहा है । एक भारतीय विद्वान इसके संबंध में अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि ऋग्वेद में कई ऐसे अंशों को मिलाकर एक नाम रख दिया गया है जिन्हें एक-एक इकाई के रूप में एक दूसरे से अलग-अलग पहचाना जाता है।

संपूर्ण ऋग्वेद की रचना और ग्रंथन एक ही काल में नहीं हुआ है। ऋग्वेद की रचना विन्यास क्रम को हम कई रूप में प्रस्तुत करते हैं-

1. रचना की दृष्टि से ऋग्वेद में सबसे प्राचीन परिवार मंडल है अर्थात ऋग्वेद के दूसरे मंडल से सातवें मंडल तक के 6 मंडल सबसे प्राचीन है। ये 6 मंडल ऋग्वेद का केंद्रीय भाग है । इन मंडलों में से प्रत्येक मंडल एक ही ऋषि या एक ही ऋषि परिवार द्वारा रचित है। इसी कारण, इन मंडलों को परिवार मंडल कहा जाता है। इन मंडलों के एक ही वंश द्वारा रचित होने के कारण आंतरिक प्रमाणों के साथ ही कुछ अन्य प्रमाण इस प्रकार हैं-

   A. वंश मंडलों के सूक्तों के साथ लिखे गए विषयों के नाम एक ही परिवार के हैं।
   B. वंश मंडलों के सूक्तों में उपलब्ध टेक एक- सी ही है ।
   C. वंश मंडलों में सूक्त एक विशेष, देवता -क्रम से रखे गए हैं। जैसे सर्वप्रथम अग्नि के सूक्त, उसके बाद इंद्र के सूक्त और उसके बाद अन्य देवताओं के सूक्त रखे गए हैं।
   D. वंश मंडलों में संकलित सूक्तों की कुल संख्या में भी क्रमश: वृद्धि होती गई है अर्थात दूसरे से तीसरे में और तीसरे से चौथे में इसी क्रम से सातवें मंडल तक सूक्तों की संख्या बढ़ती चली गई है।

2. ऋग्वेद की रचना विन्यास क्रम में दूसरा स्थान आठवें मंडल का माना जाता है । इनका कारण यह है कि आंशिक रूप में यह वंश मंडलों से समानता रखता है । इसमें भी अधिकांश सूक्त कण्व परिवार के हैं । इसी विशेषता के कारण आठवें ओ मंडल को भी परिवार मंडलों के अंत में रख दिया गया है । आठवें मंडल की विशेषताएं इसे वंश मंडलों से बाद की रचना सिद्ध करती है यह विशेषताएं इस प्रकार है।

A. पहले कहा जा चुका है कि 2 से 7 तक के मंडलों में सूक्तों की कुल संख्या निरंतर बढ़ती गई है । इसके विपरीत आठवें मंडल में सूक्तों की संख्या सातवे मंडल से कम हो गई है । इससे अनुमान लगाया जाता है कि यह मंडल बाद की रचना है।
B. वंश मंडलों में सबसे प्रथम अग्नि के सूक्त रखे गए हैं, किंतु इस मंडल में पहला सूक्त् अग्नि का नहीं है ।
C. प्रगाथ छंद की प्रधानता का होना भी आठवें मंडल को बाद की रचना सिद्ध करता है ।
D. आठवें मंडल और प्रथम मंडल के पूर्व भाग में समानता का होना भी इसी बात का सूचक है कि आठवां मुडल बाद में रचा गया है । इन दोनों मंडलों में कुछ ऋचाएं एक सी ही है और कुछ अर्थ की दृष्टि से समानता रखती है । दोनों अंशों के रचयिता भी कण्व ही है।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि आठवां मंडल और प्रथम मंडल का पूर्व भाग यह दोनों एक ही काल की रचनाएं है जो निश्चय ही वंश मंडलों के बाद की है।

3. ऋग्वेद के विन्यास क्रम में तृतीय स्थान नवम् मंडल का है। इसे 'सोम मंडल 'या 'पवमान मंडल' भी कहा जाता है क्योंकि इसके सभी सूक्त सोम से संबंधित है।

ऐसा प्रतीत होता है कि 2-8 तक के सात मंडलों के विन्यास के साथ ऋग्वेद में नवा मंडल जोड़ा गया है। इसके सभी सूक्त् 2 -7 के वंश मंडलों से संकलित है । अतः उसके ऋषि भी वही है, जो वंश- मंडलों के है । वंश मंडलों में से ही सोम सम्बन्धी सूक्त लेकर नौवा मंडल बनाया गया है । अतः इसका विन्यास 2-8 मंडलों के पश्चात ही निश्चित होता है।

4. 2-9 मंडल तक की ऋग्वेद संहिता के तैयार हो जाने पर, प्रथम मंडल को उसके आदि में और दशम मंडल को उसके अंत में जोड़ दिया गया है।

दशम मंडल की रचना की अपेक्षा भी प्रथम मंडल की रचना प्राचीन है । इसका कारण यह है कि प्रथम मंडल के पूर्वार्द्ध के सूक्तों की समानता आठवें मंडल के सूक्तों से है और प्रथम मंडल के उत्तरार्ध के सूक्तों की समानता वंश मंडलों के सूक्तो से है।

5. रचना और विन्यास क्रम की दृष्टि से ऋग्वेद के दशम मंडल का स्थान सबसे बाद का है। इस संबंध में जो तर्क दिए जाते हैं वह इस प्रकार है-

वंश मंडलों से सभी सोम-संबंधित सूक्तो को नवम मंडल में रखने से प्रतीत होता है कि ऋग्वेद की मूल संहिता वहां तक पूरी हो चुकी थी । इसके बाद दशम मंडल का आना बाद में हुए परिवर्तन को सूचित करता है।

दशम मंडल की कुल संख्या 191 है । यह संख्या भी ऋग्वेद के प्रथम मंडल की कुल सूक्त संख्या का ही अनुकरण प्रतीत होती है।

इतना ही नहीं दशम मंडल के 1 वर्ग सूक्त 20 -26 का प्रारंभ अग्निमीळे पद से हुआ है इसमें भी ऋग्वेद 1/1/1 का ही अनुकरण है।

दशम मंडल के देवताओं का स्वरूप भी पूर्व मंडलों के देवताओं से भिन्न है । पूर्व के मंडलों के देवता प्राकृतिक शक्तियों के मानवीकृत रूप हैं, किंतु दशम मंडल में सूक्ष्म भावनाओं को भी देवताओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है जैसे- यहां मनस्, मन्यु, सत्य, वाक और ज्ञान आदि की स्तुति की गई है।

दशम मंडल में विश्वेदेवा:- जैसी सामूहिक दे वह -भावना भी मिलती है। साथ ही राज यलक्ष्मघ्नम्, अलक्ष्मघ्नम् और सपत्नघ्नम् का नाम जैसे -ऐन्द्रजालिक विषय भी इसमें है, जो दशम मंडल और अथर्ववेद में समानता को प्रकट करते हैं।

अन्य मंडल की तुलना में कुछ नितान्त नवीन विषय भी दशम् मंडल में मिलते हैं ।जैसे -सृष्टि- उत्पत्ति, अन्य दार्शनिक कल्पनाएं, अंत्येष्टि सूक्त यंत्र मंत्र, संवाद सूक्त और वेदांत सूक्त आदि ।

6. भाषा की दृष्टि से भी दशम मंडल अर्वाचीन प्रतीत होता है

इसमें संधि युक्त पदों का प्रयोग निरंतर वृद्धि पर है । जैसे -वरेणि अम् के स्थान पर वरेण्यम् । र ध्वनि के स्थान पर ल ध्वनि अधिक प्रयुक्त हुई है । 'आसस्' प्रत्यय से बनने वाला प्रथमा बहुवचन का प्रयोग कम होता गया है। अनेक पुराने पदों का प्रयोग दशम मंडल में या तो हुआ ही नहीं है या बहुत कम हुआ है । पूर्व मंडलों में 50 बार प्रयुक्त हुआ 'सीम्' निपात शब्द इसमें केवल एक बार ही आया है । अर्वाचीन संस्कृत के अनेक शब्द भी दशम मंडल में प्रयुक्त हुए हैं, जैसे -लभ ,काल ,लक्ष्मी आदि ।

संक्षेप में ऋग्वेद के मंडलों की रचना व्यवस्था का क्रम इस रूप में प्रतीत होता है-

1. सर्वप्रथम 2-7 तक के वंश मंडलों का संग्रह बना
2. उसके बाद आठवां मंडल उस में जोड़ा गया
3. तत्पश्चात 28 तक के मंडलों में आए सोम सूत्रों को पृथक करके उन्हें नौवें मंडल में रखा गया
4. इसके बाद एक माह तथा दसमा मंडल इस संग्रह में जोड़ दिया गया दशम मंडल की तुलना में भी प्रथम मंडल प्राचीन है सारांश ग्रुप में ऋग्वेद में 2-7 मंडल सबसे प्राचीन है और दशम मंडल सबसे अर्वाचीन है।